

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये एकादशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীয়ে একাদশং দশকম্ ॥

সনকাদীনাং রৈকুণ্ঠপ্রবেশবর্ণনং, জয়বিজয়শাপবর্ণনং,

হিরণ্যকশিপুহিরণ্যাক্ষোৎপত্তিবর্ণনং চ

ক্রমেণ সর্গে পরিবর্ধমাণে

কদাপি দিব্যাস্তসনকাদযস্তে।

ভরদ্বিলোকায রিকুণ্ঠলোকং

প্রবেদিরে মারুতমন্দিরেশ ॥ 11.1 ॥

মনোজ্ঞনৈশ্রেয়সকাননাদ্যৈ -

রনেকরাপীমণিমন্দিরৈশ্চ।

অনোপমং তং ভরতো নিকেতং

মুনীশ্বররাঃ প্রাপুরতীতকক্ষ্যাঃ ॥ 11.2 ॥

ভরদ্বিদৃক্ষুন্ডবরনং রিরিক্ষুন্

দ্বাঃস্টৌ জয়স্তান্ বিজযোহপ্যরুক্ষাম্।

তেষাং চ চিত্তে পদমাপ কোপঃ

সর্বং ভরৎপ্রেরণযৈর ভূমন্ ॥ 11.3 ॥

রৈকুণ্ঠলোকানুচিতপ্রবেষ্টৌ

কষ্টৌ যুরাং দৈত্যগতিং ভজেতম্।

ইতি প্রশস্তৌ ভরদাশ্রযৌ তৌ

হরিস্মৃতির্নোহস্ত্বিতি নেমতুস্তান্ ॥ 11.4 ॥

তদেতদাজ্জায় ভরানরাপ্তঃ

সহৈর লক্ষ্ম্যা বহিরম্বুজাক্ষ।

खगेश्वरांसार्पितचारुबाहू -  
रानन्दयंस्तानभिराममूर्त्या ॥ 11.5 ॥

प्रसाद्य गीर्भिः स्मरतो मुनीन्द्रा -  
ननन्याथारथ पार्षदौ तौ।  
संरञ्जयोगेन भ्रैस्त्रिभिर्मा -  
मुपेतमित्यातुकृपं न्यगादीः ॥ 11.6 ॥

एरदीयभृत्यारथ काश्यपात्तौ  
सुरारिरीरारुदितौ दितौ द्वौ।  
सक्त्यासमुत्पादनकष्टचेष्टौ  
यमौ च लोकस्य यमारिरान्यौ ॥ 11.7 ॥

हिरण्यपूरुः कशिपुः किलैकः  
परौ हिरण्यम् इति प्रतीतः।  
उभौ भरन्नाथमशेषलोकं  
रुषा न्यरुक्त्वां निजरासनाक्षौ ॥ 11.8 ॥

तयोर्हिरण्यम्महासुरेन्द्रो  
रणाय धारन्नरापुत्रैरी।  
भरत्प्रियां म्हां सलिले निमज्य  
चचार गर्गाद्विनदन् गदारान् ॥ 11.9 ॥

ततो जलेशां सदृशं भरञ्जं  
निशम्य बभ्राम गणेशयंस्त्राम्।  
भ्रैकदृश्यः स कृपानिधे एरं  
निरुक्त्वा रोगान् मरुदालयेश ॥ 11.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये एकादशं दशकं समाप्तम् ॥